

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन

श्रीमती सुशीला कुमारी शर्मा¹, डॉ. सुभाष पुरोहित²

¹शोध छात्रा, (शिक्षा), जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

²सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण, महाविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन पर आधारित है। वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम का विकास लगभग 69.52% का समग्र प्राप्तांक यह संकेत करता है कि उत्तरदाताओं को लगता है कि पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों तथा विषय की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने के प्रयास किए जाते हैं। फिर भी बदलती तकनीक, रोजगार की आवश्यकताओं, नई ज्ञान-विधाओं और विद्यार्थियों की बदलती अपेक्षाओं के कारण पाठ्यक्रम के नियमित अद्यतन की आवश्यकता हो सकती है।

मूल्यांकन के पाठ्यचर्या संबंधी पहलुओं के संदर्भ में कार्मिकों तथा विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं की तुलना की गई। इस क्षेत्र में पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों एवं विषय की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप विकास, अपेक्षित अधिगम परिणामों की स्पष्टता, शैक्षणिक कार्यक्रमों में लचीलापन, प्राप्त प्रतिक्रियाओं का सुधार हेतु उपयोग तथा पाठ्यचर्या संबंधी सुधारों में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य संबंधित पक्षों की सहभागिता जैसे पहलुओं को सम्मिलित किया गया है।

1. प्रस्तावना

प्रत्येक बालक जन्म से ही सीखना प्रारंभ करता है यही सीखना उसके व्यवहार में परिवर्तन लाता है। मानव अपनी शैशवावस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था तक भी हर दिन कुछ न कुछ नया सीखता ही रहता है। सीखना ही शिक्षा कहलाता है। बालक की प्रथम शिक्षा उसकी माता के द्वारा प्रारंभ होती है। घर परिवार में बालक सीखता है। बालक अपनी प्राथमिक शिक्षा से उच्च माध्यमिक शिक्षा विद्यालय में पूर्ण करता है। बालक की उच्चतर शिक्षा के लिए महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय होते हैं। विश्वविद्यालय में पाठ्यचर्या एक अति महत्वपूर्ण पहलु होता है। विद्यार्थी के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उसके शैक्षिक ज्ञान के साथ-साथ कौशल पर ध्यान देते हुए उसके सर्वांगीण विकास पर ध्यान देना भी जरूरी होता है। पाठ्यचर्या के अन्तर्गत उसके शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं मूल्यांकन गतिविधियों को निर्धारित कर उसे लागू करना एवं उसका पूर्ण पालन करना है। नेक के आधार पर पाठ्यचर्या का निर्धारण किया जाता है।

2. शोध शीर्षक

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन।

3. शोध प्रश्न

1. विश्वविद्यालय में पाठ्यचर्या का पहलु कैसा होता हैं?
2. विश्वविद्यालय में पाठ्यचर्या के पहलु कार्मिक एवं विद्यार्थी के अनुसार कैसे हैं?

4. शोध उद्देश्य

1. राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन।
2. राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी कार्मिक एवं विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. शोध परिकल्पना

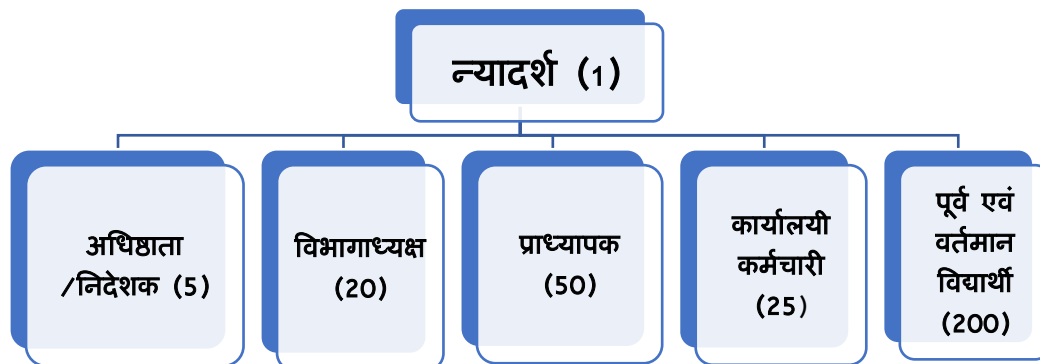
1. NAAC द्वारा “A” ग्रेड प्रदत्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में गुणवत्ता मूल्यांकन के क्षेत्र पाठ्यचर्या संबंधी पहलू पर कार्मिकों तथा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध परिसीमन

1. प्रस्तुत शोधकार्य का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य के “ए” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों तक सीमित रखा गया।

7. न्यादर्श चयन

उपर्युक्त शोध हेतु सौद्देश्य प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श चयन किया गया जो इस प्रकार है :-



प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन हेतु राजस्थान राज्य के “ए” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का चयन लॉटरी विधि से किया गया। जिसमें 1 विश्वविद्यालय का चयन किया गया। जिसके अन्तर्गत अधिष्ठाता/निदेशक 5, विभागाध्यक्ष 20, प्राध्यापक 50, कार्यालय कर्मचारी 25 एवं विद्यार्थी 200 का चयन करते हुए कुल 300 का न्यादर्श चयन किया गया।

8. शोध विधि, प्रविधि, उपकरण

8.1 शोध विधि

इस अनुसंधान में शोधार्थी ने राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

8.2 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों में ‘टी’ परीक्षण का प्रयोग किया गया।

8.3 शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण द्वारा आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित उपकरण **संस्थागत गुणवत्ता मापनी** का प्रयोग किया गया है।

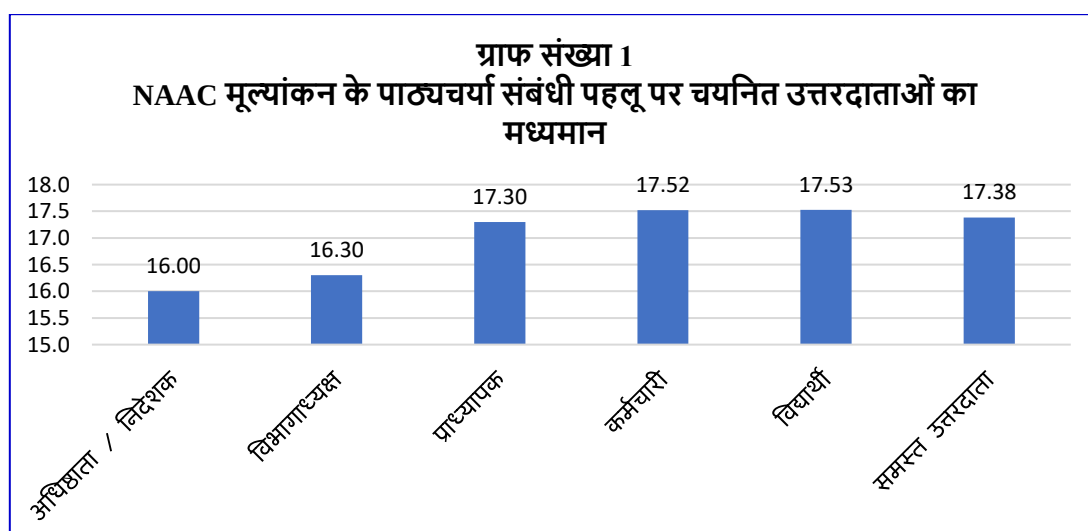
9. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1 : राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन।

सारणी संख्या 1

NAAC मूल्यांकन के पाठ्यचर्या संबंधी पहलू पर चयनित उत्तरदाताओं के मध्यमान, माध्य भार प्राप्तांक एवं प्रतिशत

	पाठ्यचर्या संबंधी पहलू		
	मध्यमान	माध्य भार प्राप्तांक	प्रतिशत
अधिष्ठाता / निदेशक (5)	16.00	3.20	64.00
विभागाध्यक्ष (20)	16.30	3.26	65.20
प्राध्यापक (50)	17.30	3.46	69.20
कर्मचारी (25)	17.52	3.50	70.08
विद्यार्थी (200)	17.53	3.51	70.10
समस्त उत्तरदाता (300)	17.38	3.48	69.52



आरेख संख्या 1

NAAC मूल्यांकन के पाठ्यचर्या संबंधी पहलू पर चयनित उत्तरदाताओं के मध्यमान, माध्य भार प्राप्तांक एवं प्रतिशत

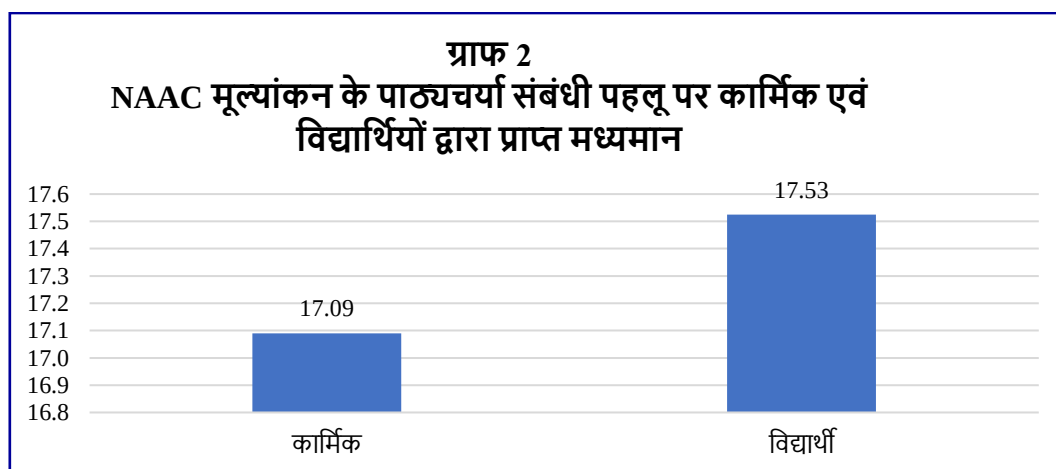
विश्लेषण :- सारणी संख्या 1 में NAAC मूल्यांकन के पाठ्यचर्या संबंधी पहलू के संबंध में सभी 300 उत्तरदाताओं का कुल मध्यमान 17.38 रहा, जबकि अधिकतम संभव मध्यमान 25 था। इसी प्रकार माध्य भार प्राप्तांक 3.48 रहा, जबकि अधिकतम संभव माध्य भार प्राप्तांक 5 था। तथा प्रतिशत 69.52% प्राप्त हुआ। अधिष्ठाता/निदेशक (5) समूह का मध्यमान 16.00, माध्य भार प्राप्तांक 3.20 तथा प्रतिशत 64.00% रहा, जो सभी समूहों में सबसे कम है। विभागाध्यक्ष (20) समूह का मध्यमान 16.30, माध्य भार प्राप्तांक 3.26 तथा प्रतिशत 65.20% रहा। प्राध्यापक (50) समूह का मध्यमान 17.30, माध्य भार प्राप्तांक 3.46 तथा प्रतिशत 69.20% रहा। कर्मचारी (25) समूह ने मध्यमान 17.52, माध्य भार प्राप्तांक 3.50 तथा प्रतिशत 70.08% प्राप्त किया। विद्यार्थी (200) समूह का मध्यमान 17.53, माध्य भार प्राप्तांक 3.51 तथा प्रतिशत 70.10% रहा, जो सभी समूहों में सर्वाधिक है।

उद्देश्य सं. 2 : राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से “A” ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का पाठ्यचर्या संबंधी कार्मिक एवं विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या 2

NAAC मूल्यांकन के पाठ्यचर्या संबंधी पहलू पर कार्मिक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मध्यमान की तुलना

	पाठ्यचर्या संबंधी पहलू	
	कार्मिक	विद्यार्थी
N	100	200
मध्यमान	17.09	17.53
मानक विचलन	1.558	2.334
मध्यमान अन्तर	0.435	
t मान	1.685	
p मान	0.093	



आरेख संख्या 2

NAAC मूल्यांकन के पाठ्यचर्या संबंधी पहलू पर कार्मिक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मध्यमान की तुलना

विश्लेषण :- सारणी संख्या 2. में NAAC मूल्यांकन के प्रथम क्षेत्र पाठ्यचर्या संबंधी पहलुओं के संदर्भ में कार्मिकों तथा विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं की तुलना की गई। इस क्षेत्र में पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों एवं विषय की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप विकास, अपेक्षित अधिगम परिणामों की स्पष्टता, शैक्षणिक कार्यक्रमों में लचीलापन, प्राप्त प्रतिक्रियाओं का सुधार हेतु उपयोग तथा पाठ्यचर्या संबंधी सुधारों में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य संबंधित पक्षों की सहभागिता जैसे पहलुओं को सम्मिलित किया गया है। तालिका के अनुसार, 100 कार्मिकों का क्षेत्र-1 पर मध्यमान 17.09 तथा मानक विचलन 1.558 पाया गया, जबकि 200 विद्यार्थियों का मध्यमान 17.53 तथा मानक विचलन 2.334 रहा। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों का औसत प्राप्तांक कार्मिकों की तुलना में कुछ अधिक है। दोनों समूहों के मध्यमानों में 0.435 का अन्तर पाया गया, जो बहुत अधिक नहीं है।

परिकल्पना सं. 1. : NAAC द्वारा “A” ग्रेड प्रदत्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में गुणवत्ता मूल्यांकन के क्षेत्र पाठ्यचर्या संबंधी पहलू पर कार्मिकों तथा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :- कार्मिकों एवं विद्यार्थियों के मध्यमानों के अन्तर की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच के लिए t-परीक्षण किया गया। प्राप्त t-मूल्य 1.685 तथा p-मूल्य 0.093 है। चूँकि p-मूल्य 0.05 से अधिक है, अतः दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच पाया गया अन्तर 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कार्मिकों और विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया। दूसरे शब्दों में, दोनों समूहों का पाठ्यचर्या संबंधी पहलुओं के प्रति दृष्टिकोण सामान्यतः समान है। “NAAC द्वारा “A” ग्रेड प्रदत्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में गुणवत्ता मूल्यांकन के क्षेत्र पाठ्यचर्या संबंधी पहलू पर कार्मिकों तथा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है” को स्वीकृत किया जाता है।

10. शोध से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त दत्तों का विश्लेषण करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए :-

- पाठ्यक्रम में कुछ लचीलापन उपलब्ध है, लेकिन विद्यार्थियों की विविध क्षमताओं, रुचियों, सीखने की गति और विषयगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इसे और बढ़ाया जा सकता है।
- वैकल्पिक विषय, क्रेडिट विकल्प, कौशल-आधारित पाठ्यक्रम तथा विभिन्न प्रकार की शिक्षण गतिविधियाँ इस दिशा में उपयोगी हो सकती हैं।
- प्राप्त प्राप्तांक से संकेत मिलता है कि सहभागिता को महत्व दिया जाता है, लेकिन पाठ्यचर्या संशोधन समितियों, फीडबैक तंत्र, विद्यार्थी प्रतिनिधित्व तथा उद्योग/विशेषज्ञ सहभागिता को और व्यवस्थित किया जा सकता है।
- कुल मिलाकर, 17.38/25 का माध्य, 3.48/5 का माध्य भार प्राप्तांक और 69.52% का प्रतिशत यह दर्शाता है कि संस्थान में पाठ्यचर्या संबंधी पहलुओं की स्थिति मध्यम से संतोषजनक स्तर की है।
- अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि (पाठ्यचर्या संबंधी पहलू (में कार्मिकों और विद्यार्थियों की धारणाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया) $t = 1.685$, $p = 0.093 > 0.05$)। दोनों समूहों ने पाठ्यचर्या संबंधी व्यवस्थाओं का लगभग समान स्तर पर मूल्यांकन किया है।
- पाठ्यक्रम निर्माण एवं शैक्षणिक सुधार की प्रक्रियाएँ संस्थागत स्तर पर निर्धारित होती हैं, जिनका अनुभव कार्मिकों और विद्यार्थियों दोनों को होता है।
- पाठ्यक्रम में वर्तमान आवश्यकताओं के समावेश, अधिगम परिणामों की स्पष्टता, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप लचीलापन तथा प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर सुधार जैसे प्रयास दोनों समूहों के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ :-

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2014), " विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री", श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. व्यास, डॉ. भगवतीलाल (2016), "समकालीन भारत और शिक्षा", राधा प्रकाशन प्रा. लि., आगरा।
3. कपिल, एच.के. (2007) "अनुसंधान विधियाँ", एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट, आगरा
4. कपिल, एच.के. (2010) "सांख्यिकी के मूल तत्व", अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-2
5. भट्नागर, सुरेश (1992-93) 'शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. भार्गव, डॉ. महेश (2003), "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन" वेदान्त पब्लिकेशन लखनऊ।
7. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (2006) 'शिक्षा मनोविज्ञान, अनु प्रकाशन, जयपुर।
8. गैरेट हेनरी ई. (1989), 'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग कल्याणी पब्लिशर्स, उ.प्र. ।
9. माथुर, डॉ. एस.एस. (1993). 'शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। पाठक,
10. Berman, P. & McLaughlin, M. (1978) Implementation of education innovation. Educational Forum, 40 (3) 345-370